Indian Streams Research Journal
International Recognized Multidisciplinary Research Journal
ISSN No : 2230-7850 Impact Factor : 3.1560 (UIF) [Yr. 2014]
ISSN 2230-7850 Impact Factor : 3.1560 (UIF) Volume - 5 | Issue - 12 | Jan - 2016

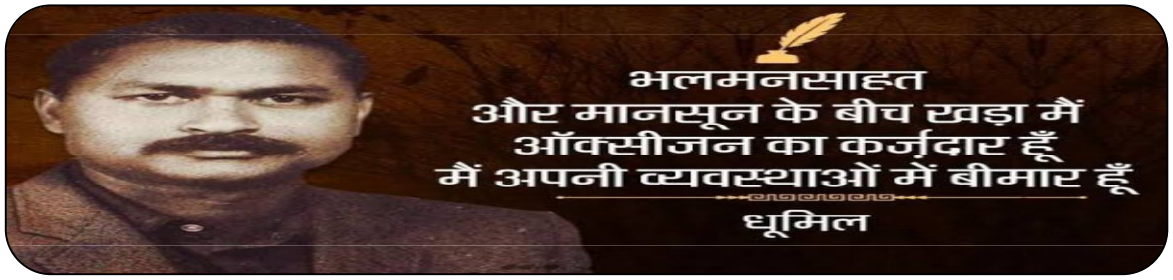

धूमिल की कविता मे जनवादी चेतना

प्रा.डॉ.जाधव युवराज इंद्रजित
आदर्श कॉलेज उमरगा ता.उमरगा , जि. उस्मानाबाद.

भारतीय जनतंत्र में स्वतंत्रता समता, बंधूत्व, न्याय, धर्मनिरपेक्षता को काफी महत्व दिया गया है। जनतंत्र मे श्रमीक मजदूर, किसान को आधारस्तंभ माना जाता है। समस्त जनता की आशाओं आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति का नाम जनवादी विचार है। वर्तमान समय में जनवादी विचारधारा का स्वरुप काफी व्यापक बना हुआ है। कुछ विद्वान जनवाद की जनता के संगठन और एकता की शक्ति भी मानते है। जनसामान्य के शोषण दु:ख पीडा त्रासदी की अभिव्यक्ती देनेवाली विचारधारा ही जनवादी चेतना है। जो साहित्यकार या कवि समकालिन वास्तविकता या समय और समाज की वास्तविकताओं की अभिव्यक्ति करता है, साथ ही अपने आस-पास की समाजगत विषमता, शोषण, भ्रष्टाचार, अंधश्रध्दाएँ रुढियों परम्परागत मान्यताकों, अन्याय, अत्याचार को आँखो से देखता है पीडा को झेलता है उससे द्रविभूत होकर अभिव्यक्ति करता है वह जनवादी कवि कहलाता है। जनवादी कविता के संबंध में " इंद्रबहादूर सिंह लिखते है" जनवादी कविता इस जनता की जिंदगी को उसकी समग्रता से प्रस्तुत करती है और अपने इसी व्यापक जनाधार के कारण किसी भी समय तथा किसी भी युग मे शासक -शोषक वर्गो के समक्ष चुनौती के रुप मे प्रस्तुत होती है।" [१] स्वतंत्रता के बाद जनता ने जो स्वप्न देखा था वह चकनाचूर हो गया। समाज में पुँजिवादी व्यवस्था का विकास हुआ और सामान्य जनता शोषण की शिकार हुई। इसलिए जनवादी कवियों मे साम्राज्यवादी दलाली, ठेकेदारों के विद्रोह किया। कवियों ने आम आदमी को केंन्द्र मे रखकर चित्रण किया है। डॉ.वशिष्ठ जनवादी कविता के बारे में लिखते है, "जनवादी कविता जनता की जिंदगी के बीच उगते हुए उसकी आशाओं, आकांक्षाओ, उसके स्वप्नों तथा संघर्ष को वाणी देती है। किसी भी राष्ट्र या देश की जनता अपनी संस्कृति उसके कार्य तथा आचरण को हम बडे सहज रुप से उसके प्रतिबिंबित देख सकते है।" [२] अर्थात जनवादी कवि वह कहलाया जाता है जो समस्त जनता की आशाओं की अभिव्यक्ति स्पष्ट रुप से पाठकों के सामने लाता है। जनता की पीडा वेदना शोषण की समग्रता से अभिव्यक्ति देता है।

स्वतंत्रता के पश्चात पुरे विश्व के आर्थिक मंदी को जो दौर या उसका परिणाम भारतपर भी पड़ा है आजादी के बाद देश अनेक समस्याओं से गुजर रहा है। देश में अकाल, भूख, बेकारी आदि ने जनता की कमर ही तोड रखी है। आजादी के बाद भी जनतंत्र मे स्वतंत्रता समता बंधुता केवल कागजों पर दिखायी दे रही है। सरकारी अधिकारी पुलिस व्यवस्था नेताओं की नीतियाँ जमीदारो का ही बोलबाला है इसके कारण आम जनता पीसी जा रही है। इसी को कवियों विषय बनाकर लिखा है। इस युग के अनेक कवियों ने जीवन के टूटते मुल्यों, भौतिकवाद परिवार के टूटते रिश्ते, समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार महंगाई को लिखा है। समकालिन कवियों मे नागार्जून शमशेर बहादूरसिंह, रामविलास शर्मा, केदारनाथ, मुक्तिबोध, रघूवीर सहाय, दुष्यंतकुमार, लीलाधर जगुडी, धुमिल, उदपप्रकाश जैसे महान जनवादी कवियों ने ग्रामीण किसानों , मजदूरो, नारियों, जनता की कमजोरियों को स्पष्ट किया है।

"धुमिल" साहित्य जगत मे जाने माने कवि, विचारक, युगद्रष्टा तथा सशक्त जनवादी कवि है। उनके साहित्य में जनवादी चिंतनधारा चरमोत्कर्ष पर थी वे ही जनता की वास्तविकता तथा संवेदना को अभिव्यक्ति देनेवाले कवि है। उनका मानना है कि लोकशाही या जनतंत्र व्यवस्था मे जनता को समता स्वतंत्रता, शिक्षण, न्याय, तथा अन्य जनकल्याण की व्यवस्था को उनके अधिकारों से दूर रखा गया था। इस

संबंध में कवि का अंतर्मन उनके काव्य संग्रहों मे अभिव्यक्त हुआ है। धूमिल जी जनता के शोषण को व्यक्त करते हुए निराश जनता की संवेदना के बारे में लिखते है।

" न कोई प्रजा है
न कोई तंत्र
यह आदमी के खिलाफ
आदमी का खुलासा षडयंत्र है।[३]

अर्थात भारतीय लोकतंत्र के खोखलेपन पर प्रकाश डालते हुए तीखे जनवादी स्वर को, जनता की संवेदना को व्यक्त करते है। धुमिलजी ने आजादी के बाद आम आदमी के खिलाफ जो षडयंत्र किया गया उसका वर्णन किया है। इन्सान थका हारा, कानूनी गुलाम बन गया है। बच्चो से लेकर बुढों तक सभी निराशावाद में जी रहे है। इसलिए उनके कविताओं भूखमरी बेकारी, महँगाई जनता का आक्रोश दिखायी देता है। उन्होने अपनी कविताओं में जनतांत्रिक विसंगतियों को चित्रित किया है। उनकी मोचीराम, बीस साल बाद, प्रौढ शिक्षा, जनतांत्रिक सुर्योदय जैसी कविताएँ जनमानस की संवेदना तथा त्रासदी को व्यक्त करती है।

बीस साल बाद कविता मे कवी लिखते है
बीस साल बाद और इस शरीर के सुनसान गलियों मे चोरो
की तरह गुजरते हुए
अपने आप से सवाल करता हुँ
क्या आजादी सिर्फ तीन थके हुए रंगो का नाम है
जिन्हे एक पहिया होता है।
या इसका कोई खास मतलब होता है। "[४]

अर्थात धूमिल स्वतंत्रता का नाम केवल तीन रंगो को वहन करनेवाला पहिया है ऐसा कहते है।
इन तीन रंगो में आम आदमी को कही आजादी दिखायी नही देती ।

धूमिल की " कल सुनना मुझे" कविता मे ग्रामीण जनता की त्रासदी, किसानों की संवेदना, मजदूरों की पीडा और संसद में बैठे कौओं की चालबाजी तथा उनके दोगलेपन के वास्तविकता को व्यक्त करती है। इस संग्रह की कविताओं मे देशप्रेम मेरे लिए, प्रजातंत्र के विरुध्द, रोटी और संसद आ जाती है । संसद के नेता आम जनता की मानसिकता के साथ खेल रहे है। कवि का प्रश्न जो तीसरे आदमी का है उसका काई उत्तर नही देता। अर्थात रोटी से खिलवाड करनेवाले पर प्रहार करते है...

"एक आदमी
रोटी बेलता है
एक आदमी रोटी खाता है
एक तीसरा आदमी भी है
जो न रोटी बेलता है न रोटी खाता है
वह रोटी से खिलवाड करता है
मै पुछता हूँ
यह तीसरा आदमी कौन है
मेरे देश का संसद मौन है। [५]

अर्थात आज भी हमारी संसद इस तीसरे आदमी का नाम स्पष्ट नही कर पा रही है। इसके बारे मे मंजू अग्रवाल लिखती है "संसद से सडक तक तथा कल सुनना मुझे रचनाओं में व्यवस्था के दबाव होस व मुर्त रुप मे अभिव्यक्त हुए है। इसलिए उनके खिलाफ लडाई वास्तविक लगती है। [६]

इस काल की कविताएँ १९६० से १९७० तक माहौल आधारित है। धुमिल जानते थे जनतंत्र को चलानेवाले अनपढ जनता का लाभ उठाकर अत्याचार करेंगे इसलिए स्वार्थी नेताओं, जमीदारों का पर्दाफाश करते हुए लिखते है इ

नही मुझे इस तरह
डबडबाई हुई आँखों से
मत घुरो
मैं तुम्हारे ही कुनबे का आदमी हुँ
शरीफ हूँ
सगा हूँ । [७]

इस प्रकार धुमिलजी किसानों की दयनीयता को देखकर उन्हे संशय की दृष्टि से देखनेवालो नेताओं को फटकार लगाते है। धुमिल अपनी जमीन पर खडे होकर अपनी कविता में अपनी मिटटी को शब्द देते थे। ग्रामीण जनता की समस्याओं को दूर कर ना तो छोडो पर किसी गाँव का विकास भी नही हुआ इसलिए वे अपनी कविताओं में विद्रोही स्वर में कहते है....

" एक ही संविधान के नीचे
भूख से रिरियाती हुयी फैली हथेली का नाम
गया है
और भूख के तनी हुई मुटटी का नाम
नक्सलवादी" [८]

निरालाजी इस प्रकार ग्रामीण जनता की दयनीय स्थिती को व्यक्त करते है। सही अर्थो में ग्रामीण मजदूर सर्वहारा के पक्षधर है। उनका भोगा हुआ यथार्थ काव्य में प्रामाणिकता भर देता है।

संदर्भ

जनवादी समीक्षा दृष्टि और जनवादी रचनाकार	:- इंद्रबहादूर सिंह	पृ.१३०
हिन्दी जनवादी कविता	:- डॉ.वशिष्ठ	पृ ८३
सुदामा पांडे का जनतंत्र	:- धुमिल	पृ १८
संसद से सडक तक	:- धुमिल	पृ १२
कल सुनना मुझे	:- धुमिल	पृ ३३
धुमिल काव्य यात्रा	:- डॉ. मंजू अग्रवाल	पृ ०४
संसद से सडक तक	:- धुमिल	पृ १३०
धुमिल काव्य यात्रा	:- डॉ. मंजू अग्रवाल	पृ १२६
संसद से सडक तक पटकथा	: - धुमिल	पृ १४०